महारानी चेलना

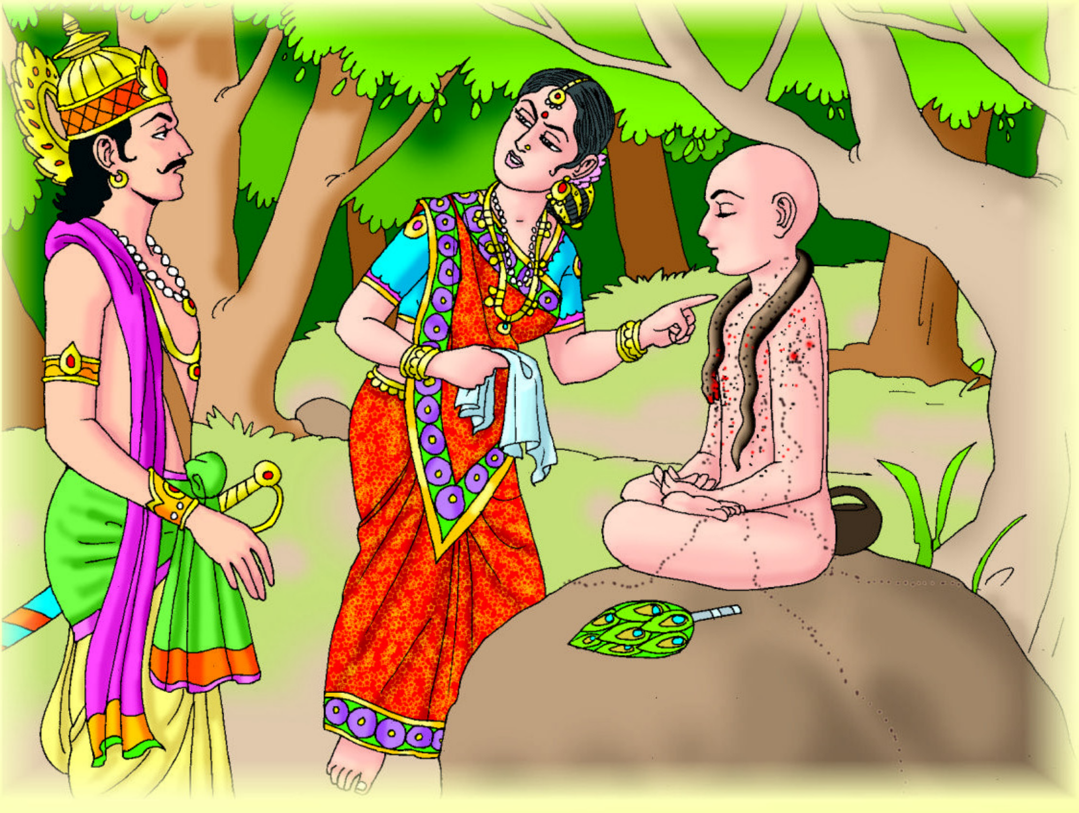

मुनिवर पर किये उपसर्गको दूर करते रानी चेलनाके साथ राजा श्रेणिक

: प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

भगवान श्री कुंदकुंद-कहान जैन शास्त्रमाला पुष्प नं. २६७

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः

महारानी चेलना

卐

: गुजराती लेखक :

ब्र. हरिलाल जैन

सोनगढ

卐

: हिन्दी अनुवादक :

पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन

बिजौलियां भीलवाडा, (राज.)

卐

: प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

प्रथमावृत्ति प्रत : १००० वि.सं. २०७५ ई.स. २०१९

महारानी चेलना (हिन्दी) के

✽ स्थायी प्रकाशन पुरस्कर्ता ✽

छगनलाल कालीदास वाधर परिवार, जामनगर

हस्ते आत्मार्थी भानुबेन, विद्याबेन एवं

जसवंतीबेनके स्मरणार्थ

मूल्य रू. 10=00

: मुद्रक :

स्मृति ओफसेट

सोनगढ (सौराष्ट्र)

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

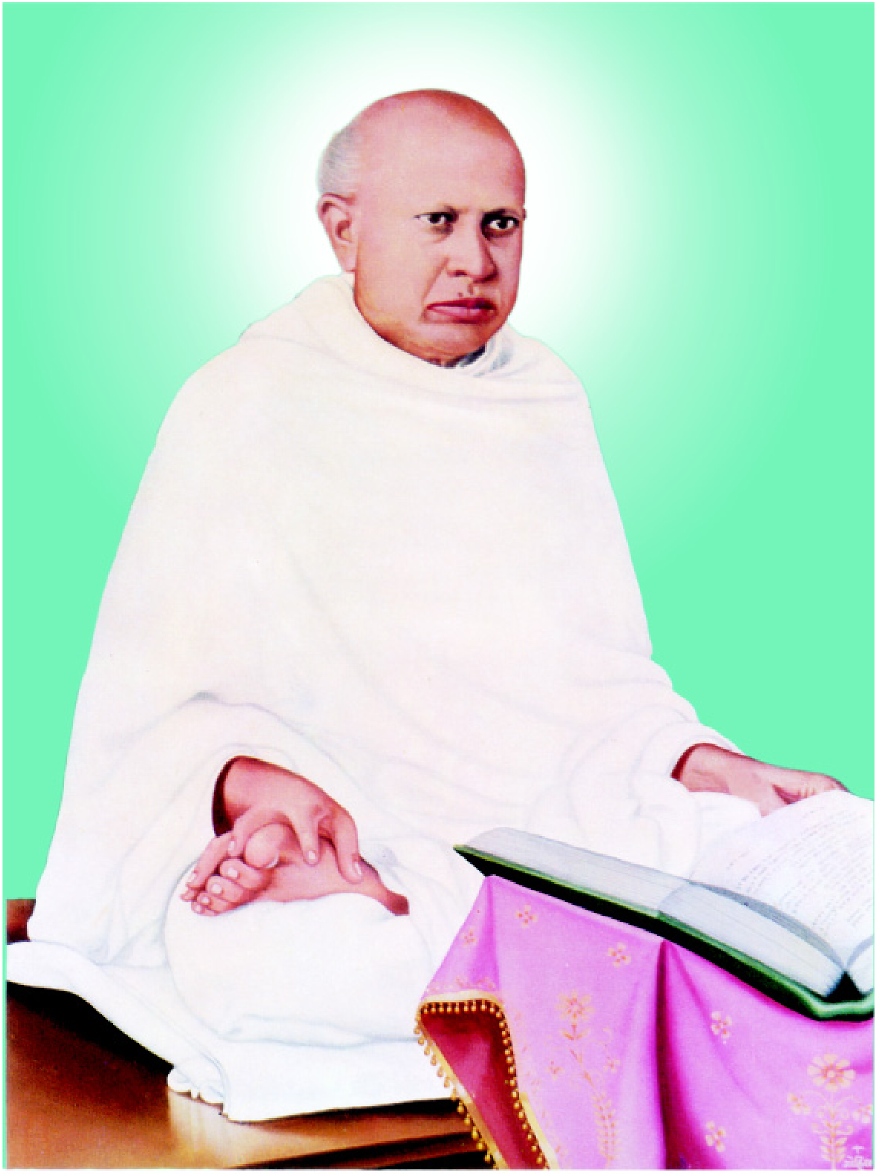

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रकाशकीय निवेदन

जिनधर्मवत्सल महारानी चेलनाके जीवन पर आधारित लघु नाटक 'महारानी चेलना'का हिन्दी प्रकाशन करते हुए हम अत्यन्त हर्षित है।

हमारे परमोपकारी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं तद्भक्त पूज्य बहिनश्री चम्पाबेनको इन महापुराण पुरुषोंके प्रति सहज अहोभाव उल्लसित होता था, जिनका प्रमाण है पूज्य गुरुदेवश्रीके प्रवचनोंमें पुराणोंके अनेक उदाहरण एवं तीर्थधाम सुवर्णपुरीके जिनालयोंकी दिवारों पर उत्कीर्ण अनेक पौराणिक दृश्य। इन उभय धर्मात्माओंके प्रतापसे ही प्रथमानुयोग समझनेकी दृष्टि प्राप्त हुई है, वरना मात्र कथा–कहानियोंको ही प्रथमानुयोग समझा जाता था।

इस नाटकमें भगवान महावीरके प्रमुख श्रोता महाराजा श्रेणिककी महारानी चेलनाका धर्मके प्रति प्रेमके दर्शाया गया है, जिससे प्रेरणा पाकर महाराजा श्रेणिकने मिथ्यामार्गका परित्याग कर सम्यक् जैन मार्ग ही नहीं प्राप्त किया अपितु इसी भवमें क्षायिक सम्यक्त्व एवं तीर्थंकर नामकर्म जैसी लोकोत्तर पुण्यप्रकृतिका भी बन्ध किया। इस कथा सचित्रमें जैन पौराणिक लघुकथा भाग-३ (पृ. ८२-१०२) में है।

प्रस्तुत नाटकका गुजरातीमें लेखनकार्य ब्रह्मचारी हरिलाल जैन, सोनगढ द्वारा जैन पुराणोंके आधारसे की है। इसके लिए उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। उसका हिन्दी अनुवाद पंडित देवेन्द्रकुमार बिजौलिया द्वारा किया गया है। तदर्थ उनके प्रति भी आभार व्यक्त करते है। मुद्रणकार्य स्मृति ऑफसेट, सोनगढ द्वारा किया गया है।

इस नाटकका अध्ययन कर सभी जीव कुदेवादिक मिथ्यात्वका त्याग कर जिनेन्द्रदेव प्रणित जैनधर्मकी साधनामे आगे बढ़कर आत्महित प्राप्त करें यही भावना सह...

पूज्य बहिनश्रीकी
१०६वीं जन्मजयंती
दि. १७-८-२०१९

साहित्यप्रकाशक समिति
श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,
सोनगढ (सौराष्ट्र)

लेखकका निवेदन

धार्मिक नाटक समाजमें धर्म संस्कारके अभिसिंचनका एक उत्तम साधन है। आजके सिनेमा और रेडियोके इस जमानेमें उत्तम प्रकारके धार्मिक नाटक मिलना भी दुर्लभ है। सोनगढ़में कभी-कभी धार्मिक नाटक मंचन किये जाते हैं.... और उस समय बालकोंमें कैसे उत्तम संस्कार पड़ते हैं, यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। ऐसे जो आठ-दस धार्मिक संवाद हुए हैं, उमेंसे एकमात्र अकलंक-निकलंक नाटक ही पुस्तकरूप प्रकाशित हुआ है, जब कि दूसरी ओर ऐसे साहित्यकी माँग का प्रवाह तो चल ही रहा है। इसलिए ऐसा लगा कि जो उत्तम नाटक मंचित हो चुके हैं, यदि वे पुस्तकाकार भी प्रकाशित हों तो गाँव-गाँवके हजारों बालक उनका लाभ ले सकें और मंचन भी कर सकें, तद्नुसार यह महारानी चेलनाका सुंदर भाववाही नाटक प्रकाशित किया है। भगवान महावीर के ढाई हजार वर्षीय निर्वाणोत्सवके निमित्त बाल साहित्यकी ऐसी पुस्तकें भी जैसे बने वैसे शीघ्र प्रकाशित करनेकी योजना आत्मधर्मके बालविभागकी ओरसे की गयी है, जो बालक युवा सबको लाभकारी होगी।

भगवान महावीर २५००वाँ
निर्वाणोत्सव पर्व
सन् १९७४

ब्रह्मचारी हरिलाल जैन

नाटक के पात्र—

(1) रानी चेलना (2) राजा श्रेणिक (3) अभयकुमार
(4) एक एकान्तमतावलम्बी गुरु एवं एक उसका शिष्य
(5) दीवानजी (6) नगर सेठ (7) दो सैनिक
(8) अभयकुमार की बहन (9) एक सखी
(10) माली (11) दूती।

आवश्यक सामग्री—

कृत्रिम सर्प, मुनिराज का स्टेच्यु या चित्र आदि।

महारानी चेलना

मंगलाचरण

करूँ नमन मैं अरिहन्त देव को
पंच परमेष्ठी प्रभु मेरे तुम इष्ट हो।
करूँ नमन मैं सिद्ध भगवन्त को
पंच परमेष्ठी प्रभु मेरे तुम इष्ट हो॥
करूँ नमन मैं आचार्य देव को
पंच परमेष्ठी प्रभु मेरे तुम इष्ट हो
करूँ नमन मैं उपाध्याय देव को
पंच परमेष्ठी प्रभु मेरे तुम इष्ट हो
करूँ नमन मैं सर्व साधु को
पंच परमेष्ठी प्रभु मेरे तुम इष्ट हो।

ॐ

परमात्मने नमः

महारानी चेलना

जिनशासन की आराधना एवं प्रभावना का प्रेरक उत्तम धार्मिक नाटक

पहला-दृश्य

जिनधर्म के वियोग में दुःखी चेलना

(रंगमंच पर सूत्रधार का प्रवेश एवं उद्‌घोषणा)

सूत्रधार—बोलिये, भगवान महावीरस्वामी की जय!

लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व जब भगवान महावीर इस भारतभूमि में तीर्थंकररूप में विचरते थे, उस समय का यह प्रसंग है। महारानी चेलना द्वारा जैनधर्म की जो महान प्रभावना हुई, वह यहाँ संवाद द्वारा दिखायी जा रही है। चेलनादेवी भगवान महावीर की मौसी, सती चन्दना की बहिन, श्रेणिक राजा की महारानी, राजगृही के राजमहल में उदासचित्त बैठी हैं। वे क्या विचार कर रही हैं, यह आप उन्हें के मुख से सुनिये। (पर्दा खुलता है।)

(चेलनादेवी विचारमग्न उदासचित्त बैठी हैं। वह स्वयं, स्वयं से ही कह रही हैं।)

चेलना—अरे रे! जैनधर्म की प्रभावना बिना यहाँ बहुत सुनसान-सा लग रहा है। यह राजवैभव.... यह राजमहल.... ये उपभोग की सामग्री... इनमें मुझे रंचमात्र भी चैन नहीं मिलता है। हे भगवान! हे वीतरागी जिनदेव!!

तुम्हारे दर्श बिना स्वामी! मुझे नहिं चैन पड़ती है।
छवि वैराग्य तेरी सामने आँखों के फिरती है॥

(गीत पूरा होते ही सखी का प्रवेश)

चेलना—सखी! अभयकुमार को बुलाओ।

सखी—जी माता!

(सखी जाती है और अभयकुमार सहित लौट आती है।)

अभय—माता प्रणाम! (आश्चर्य से) आप बेचैन क्यों हो?

चेलना—(व्यथा से) अरे, पुत्र अभय! कहाँ जैनधर्म की प्रभावना से भरपूर वैशाली नगरी और कहाँ यह राजगृही नगर! यहाँ तो जहाँ देखो वहाँ बौद्ध, बौद्ध और बौद्ध। जैनधर्म बिना यह राज्य सुनसान जंगलवत् लगता है। बेटा! जैनधर्म के अभाव में मुझे यहाँ कहीं भी चैन नहीं है।

अभय—सत्य बात है, माता! अहो, वह देश धन्य है, जहाँ तीर्थंकर भगवान स्वयं विराज रहे हों। अरे रे! यहाँ तो जिनेन्द्र भगवान के दर्शन ही दुर्लभ हो गये हैं।

चेलना—तुम सत्य कहते हो, पुत्र! ना ही यहाँ कोई जिनमन्दिर

नोट— अभयकुमार, महारानी चेलना का पुत्र नहीं है, वह दूसरी रानी का पुत्र है, किन्तु धार्मिक प्रेमवश दोनों के बीच सगे माँ-पुत्र जैसा ही स्नेह है।

दिखते हैं और ना ही दिखते हैं कोई वीतरागी मुनिराज। हाय! मैं ऐसे धर्महीन स्थान में कैसे आ गयी?

अभय—माता! अभी सारे भारत में बिहार, बंगाल, उज्जैन, गुजरात, मारवाड़, सौराष्ट्र आदि अनेक राज्यों में जैनधर्म की प्रभावना हो रही है, परन्तु अपने इस राज्य में जगह-जगह बौद्ध धर्म का ही प्रचार एवं प्रभाव है।

चेलना—हाँ, बेटा! इसलिए ही मुझे यहाँ नहीं रुचता है।

जिनधर्मविनिर्मुक्तो मा भवेत्चक्रवर्त्यपि।
स्यात्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः॥

अभय—इसका अर्थ क्या है माता!

चेलना—सुनो! इसका आशय है कि हे प्रभु! जिनधर्म के बिना तो मुझे चक्रवर्ती पद भी नहीं चाहिए, भले ही जिनधर्म सहित दरिद्री हो जाऊँ; क्योंकि इस चक्रवर्ती पद से तो वह दरिद्र सेवक अच्छा है, जो जैनधर्म के सान्निध्य में वास करता हो।

अभय—सत्य बात है, माता! जैनधर्म के सिवाय अन्य कोई शरणरूप नहीं है।

चेलना—महाराज स्वयं भी बौद्धमत के अनुयायी हैं। इस राज्य में कहीं जैनधर्म के पालनकर्ता दिखते नहीं हैं। हे माता! हे पिता! आपने बाल्यकाल में जिनेन्द्रभक्ति और तत्त्वज्ञान के जो पवित्र संस्कार हमको दिये हैं, मुझे वे ही अभी शरणरूप हैं।

अभय—माता! आपके पिता चेटक महाराज तो जैनधर्मी के सिवाय दूसरे किसी से अपनी पुत्री का विवाह रचाते ही नहीं।

चेलना—पिताजी को तो अभी खबर ही नहीं होगी कि मैं कहाँ हूँ? पिताजी ने जो जैनधर्म के संस्कार डाले हैं, उसके बल

से अब तो मैं ही महाराज को जैन बनाऊँगी और अपने जैनधर्म की शोभा बढ़ाऊँगी।

अभय—धन्य माता, आपके प्रताप से ऐसा ही हो। सारे राज्य में जैनधर्म की प्रभावना हो जाए।

चेलना—पुत्र! वैशाली के कोई समाचार नहीं आये हैं। त्रिशलामाता के नन्दन वर्द्धमान कुमार क्या करते होंगे? मेरी छोटी बहन चन्दना क्या करती होगी? अहो— वह देश धन्य है, जहाँ तीर्थंकर भगवान स्वयं ही विराज रहे हों। अरे, वहाँ के कुशलक्षेम के समाचार सुनने मिलते तो कितना अच्छा रहता?

अभय—देखो माता! दूर से कोई दूती आ रही है–ऐसा लगता है।

(दूती का प्रवेश)

चेलना—आओ बहन, आओ! क्या हैं मेरे देश के समाचार? वहाँ चतुर्विध संघ तो कुशल है? महावीरकुमार अभी दीक्षित तो नहीं हो गये? मेरी छोटी बहन चन्दना तो आनन्द में है न?

दूती—माता! जैनधर्म के प्रताप से चतुर्विध संघ तो कुशल है। महावीरकुमार तो वैराग्य प्राप्त कर दीक्षित हो गये....

चेलना—हैं! महावीरकुमार दीक्षित हो गये? धन्य है उनके वैराग्य को! मेरी त्रिशला बहन महाभाग्यशाली है। अरे रे! भगवान के वैराग्य का प्रसंग हमें देखने को नहीं मिला।

अभय—बहिन! आप चन्दनबाला के समाचार तो भूल ही गयीं।

दूती—(खेद से) माता! मैं क्या कहूँ? कुछ दिन पहले चन्दना बहिन और हम सब साथ में जंगल में खेलने गये थे, वहाँ चंदनबाला हमसे अलग होकर अकेली–अकेली मुनिराज की भक्ति कर

रही थी... वहाँ कोई दुष्ट विद्याधर आकर चन्दना को उठा ले गया।

चेलना—(आश्चर्य से) हैं, क्या मेरी बहन का अपहरण हो गया?

दूती—(द्रवित होकर) हाँ माता! बहुत दिनों से चारों ओर सैनिक खोज में लगे हुए हैं, किन्तु अभी तक कहीं पता नहीं लगा है।

चेलना—हा..... प्यारी बहन चंदना! तुम कहाँ हो?

अभय—माता! धैर्य रखो.... यही अपनी परीक्षा का समय है।

चेलना—पुत्र! अभी चारों ओर की प्रतिकूलता में एक तेरा ही सहारा है।

अभय—अरे माता! आप दु:खी न हों! आप तो अन्तर के चैतन्यतत्त्व की जानकार हो, परम नि:शंकता, वात्सल्य और धर्मप्रभावना आदि गुणों से शोभायमान हो। इसलिए धैर्यपूर्वक अभी हम ऐसा कोई उपाय विचारें, जिससे सारे राज्य में जैनधर्म की विजय का डंका बज जाए।

चेलना—पुत्र! क्या ऐसा कोई उपाय आपको सूझता है?

अभय—हाँ माता! देखो, महाराज की आपसे बहुत प्रीति है, इसलिए आप उनको किसी प्रकार से यह बात समझाओ कि बौद्धमत का एकान्त क्षणिकवाद मिथ्या है और अनेकांतरूप जैनधर्म ही एकमात्र परम सत्य है। बस! एक महाराज का हृदय पलटने के बाद हम बहुत कुछ सकते हैं।

चेलना—हाँ पुत्र! तेरी बात सत्य है। मैं महाराज को समझाने का जरूर प्रयत्न करूँगी।

अभय—अच्छा माता! मैं जाता हूँ।

(अभयकुमार चला जाता है और दृश्य बदलता है।)

दूसरा दृश्य
जिनधर्म प्रभावना का अवसर

(चेलना विचारमग्न बैठी है। उसके पास एक सखी भी है।)

(राजा श्रेणिक का प्रवेश)

सखी—बहन! श्रेणिक महाराज पधार रहे हैं।

श्रेणिक—क्या विचार कर रही हो देवी! तुम इतनी उदास क्यों रहती हो? अरे, इस उदासी का कारण हमें बताओ? शायद हम आपकी कुछ मदद कर सकें।

चेलना—महाराज! आपकी इस राजगृही में मुझे कहीं चैन नहीं पड़ता।

श्रेणिक—(आश्चर्य से) अरे, यहाँ आपको क्या दु:ख है? यह राजपाट, यह महल, नौकर-चाकर सब आपके ही हैं। आप अपनी इच्छानुसार इनका उपभोग करो।

चेलना—राजन्! मुझे जो सर्वाधिक प्रिय है, उस जैनधर्म के बिना इस राजपाट को मैं क्या करूँ! संसार में जैनधर्म के सिवाय दूसरा कोई धर्म सत्य नहीं है। जैसे मुर्दे के ऊपर शृंगार नहीं शोभता, वैसे हे राजन्! जैनधर्म बिना यह आपका राजपाट नहीं शोभता। जैनधर्म बिना यह महाराजा का पद व्यर्थ है। मुझे जैनधर्म सिवाय कुछ भी प्रिय नहीं है।

श्रेणिक—सुनो देवी! आप जैनधर्म को ही उत्तम समझ रही हो, परन्तु आप भूल कर रही हो। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जगत

में बौद्धमत ही महाधर्म है। यह राजपाट, लक्ष्मी आदि मुझे बौद्धमत के प्रताप से ही मिली है।

चेलना—नहीं–नहीं राजन्! जिनेन्द्र भगवान सर्वज्ञ हैं, उन सर्वज्ञ भगवान का कहा हुआ अनेकान्तमय जैनधर्म ही परम सत्य है। इसके सिवाय जगत में दूसरा कोई सत्यधर्म है ही नहीं। स्वामी! यह राजपाट मिला, उससे आत्मा की कोई महत्ता नहीं, आपका बौद्धमत तो एकान्त क्षणिकवादी है और एकान्ती गुरु सर्वज्ञता के अभिमान से दग्ध हैं। जबकि अरिहन्तदेव के अतिरिक्त मोक्षमार्ग का प्रणेता इस जगत में कोई है ही नहीं। राजन्! इस पावन जैनधर्म के अंगीकार करने से ही आपका कल्याण होगा।

श्रेणिक—देवी! यह चर्चा छोड़ो और इस राज्य में आप इच्छानुसार जैनधर्म का अनुसरण करो... जिनमन्दिर बनवाओ, जिनेन्द्रपूजन और महोत्सव कराओ, आपके लिये ये राज्य भण्डार खुले हैं, इसलिए आप दुःख छोड़ो और आपको जैसे प्रसन्नता होवे, वैसा करो। आपको जैनधर्म के लिये सब कुछ करने की छूट है... परन्तु मैं तो बौद्धमत को ही पालनेवाला हूँ, मैं बौद्धमत को छोड़कर, अन्य किसी भी धर्म को उत्तम नहीं मानता हूँ।

(श्रेणिक जाने के लिये उद्यत होते हैं, तभी अभयकुमार का प्रवेश)

अभय—पिताश्री! अभी बौद्धमत के अभिमान से आप जैसा चाहो वैसा कहो, परन्तु मेरी बात याद रखना कि एक बार मेरी इन चेलना माता के प्रताप से आपको जैनधर्म की शरण में आना ही पड़ेगा और उस समय आपके पश्चात्ताप का पार नहीं रहेगा।

श्रेणिक—तुम यह बात छोड़ो। मेरे बौद्ध गुरु तो सर्वज्ञ हैं, वे सब बात जान सकते हैं।

चेलना—नहीं, महाराज! वे सर्वज्ञ नहीं हैं, किन्तु सर्वज्ञता का ढोंग करते हैं। जिसको अभी तक आत्मा के वास्तविक स्वरूप का ही ज्ञान नहीं है, वह सर्वज्ञ कहाँ से हो सकता है?

श्रेणिक—अरे देवी! परीक्षा किये बिना ऐसा कहना उचित नहीं है।

अभय—ठीक है महाराज! आपके गुरु सर्वज्ञ हों तो आज हमारे यहाँ भोजन के लिये उनको आमन्त्रित कीजिए, हम उनकी परीक्षा करेंगे।

श्रेणिक—बहुत अच्छा, मैं अभी मेरे गुरु को भोजन पर आमन्त्रित करता हूँ।

(राजा श्रेणिक चले जाते हैं।)

चेलना—पुत्र! अब हम अपने जैनधर्म की प्रभावना के लिये सब उपाय कर सकते हैं। अब मैं महाराजा को बता दूँगी कि बौद्धगुरु कैसे ढोंगी है, परन्तु मुझे इतने से सन्तोष नहीं होगा। जब सारे नगर में, घर-घर में बौद्धमत की जगह जैनधर्म का झण्डा फहरायेगा और जैनधर्म की जयनाद से पूरा नगर गुंजायमान होगा, तभी मुझे सन्तोष होगा।

अभय—हे माता! आपके प्रताप से अब यह अवसर बहुत दूर नहीं। मुझे विश्वास है कि आपके प्रताप से अब महाराज थोड़े ही समय में बौद्धमत को छोड़कर जैनधर्म के परम भक्त बन जाएँगे और सम्पूर्ण नगर में जैनधर्म का जयकार गुंजायमान हो उठेगा।

चेलना—वाह, पुत्र वाह! धन्य होगी वह घड़ी, जब हमारे दिगम्बर जैनधर्म का यहाँ मन्दिर होगा।

अभय—माता! आज तो अपने आनन्द का दिवस है। आओ!

जिनेन्द्रभक्ति द्वारा हम आनन्द को अभिव्यक्त करें।

छोटा-सा मन्दिर बनायेंगे, वीर गुण गायेंगे, वीर गुण गायेंगे।
महावीर गुण गायेंगे, छोटा-सा मन्दिर बनायेंगे वीर गुण गायेंगे ।।टेक ।।

हाथों में लेके सोने के कलशे, सोने के कलशे चाँदी के कलशे।
प्रभुजी का न्हवन करायेंगे, वीर गुण गायेंगे ।। छोटा-सा मन्दिर० ।।1 ।।

हाथों में लेके पूजा की थाली, पूजा की थाली, अष्टद्रव्यों की थाली।
प्रभुजी का पूजन रचायेंगे, वीर गुण गायेंगे ।।छोटा-सा मन्दिर० ।।2 ।।

हाथों में लेके झांझ मजीरे, झांझ मजीरे, भाव भरीजे।
प्रभुजी की भक्ति करायेंगे वीर गुण गायेंगे ।।छोटा-सा मन्दिर० ।।3 ।।

चेलना—पुत्र अभय! महाराज ने हमको जैनधर्म के लिये जो करना हो, वह करने की छूट दे दी है, उसका हम आज से ही उपयोग करेंगे।

अभय—हाँ माता! हमें ऐसा ही करना चाहिए। नहीं तो एकान्ती गुरु बीच में विघ्न डालेंगे, परन्तु हम जैनधर्म की प्रभावना के लिये क्या उपाय करेंगे?

चेलना—पुत्र! मेरे हृदय में एक भव्य जिनमन्दिर बनवाने का विचार आया है, अभी दीवानजी को बुलाकर उसकी शुरुआत कर दें।

अभय—आपका विचार बहुत अच्छा है। हम जिनमन्दिर में श्री जिनेन्द्र भगवान की प्रतिष्ठा का ऐसा भव्य महोत्सव करेंगे कि जैनधर्म का प्रभाव देखकर सारा नगर आश्चर्य में पड़ जाएगा।

चेलना—हाँ पुत्र! ऐसा ही करेंगे। तुम अभी जाकर दीवानजी को बुला लाओ।

अभय—जाता हूँ माताजी।

(जाकर दीवानजी सहित आता है।)

दीवानजी—नमस्ते माताजी!

चेलना—पधारो दीवानजी! आपको एक मंगल कार्य सौंपने के लिये बुलाया है।

दीवानजी—कहिये महारानीजी! क्या आज्ञा है?

चेलना—देखो, दीवानजी! मेरा भाव एक अत्यन्त भव्य जिनमन्दिर बनवाने का है। आप शीघ्र ही उसकी तैयारी करो तथा उसमें जिनेन्द्र भगवान के पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की भी योजना बनाओ।

दीवानजी—जैसी आपकी आज्ञा; मेरा धन्य भाग्य है, जो ऐसा मंगल कार्य आपने मुझे सौंपा। इस मंगल कार्य के लिये कितनी सोने की मोहरें खर्च करने का आपका भाव है?

चेलना—दीवानजी! कम से कम एक करोड़ सोने की मोहरें तो अवश्य ही खर्च करना। इसके उपरान्त विशेष आपको मन भावे उतनी अधिक से अधिक खर्च करने की आपके लिये छूट है। जिनमन्दिर की शोभा में, सुन्दरता में किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहनी चाहिए और प्रतिष्ठा महोत्सव तो ऐसा उत्कृष्ट और भव्य होना चाहिए कि सारा नगर जैनधर्म के जय-जयकार से गुंजायमान हो उठे। इस कार्य के लिये राज्य के भण्डार खुले हैं।

दीवानजी—जो आज्ञा, महारानीजी!

(दीवानजी चले जाते हैं और शीघ्र ही मन्दिर निर्माण का कार्य तेजी से आरम्भ करा देते हैं।)

तीसरा दृश्य

बौद्ध गुरुओं को निमन्त्रण और परीक्षा

(मठ में बौद्ध गुरु आसन पर बैठे हुए पुस्तक पढ़ रहे हैं।)

(नेपथ्य से बौद्ध गुरु)

बुद्धं शरणं गच्छामि।...
बुद्धं शरणं गच्छामि।...
बुद्धं शरणं गच्छामि।...

(राजा श्रेणिक का प्रवेश)

श्रेणिक—नमोऽस्तु महाराज!

बौद्ध गुरु (1)—पधारो राजन्! चेलना रानी के क्या समाचार हैं?

श्रेणिक—महाराज! चेलना बहुत दिनों से उदास थी, कल ही मैंने उसको जैनधर्म के लिये जो करना हो, वह करने की छूट दे दी है।

बौद्ध गुरु (2)—क्या? चेलना को आपने जैनधर्म की छूट दे दी?

श्रेणिक—जी हाँ! और दूसरा समाचार यह है कि मैंने चेलना से आपकी खूब प्रशंसा की, जिससे प्रसन्न होकर उसने आपको भोजन का निमन्त्रण दिया है।

बौद्ध गुरु (1)—बहुत अच्छा राजन्! हम जरूर आयेंगे और चेलना को समझाकर बौद्ध धर्म का भक्त बनाएँगे।

श्रेणिक—हाँ महाराज! परन्तु बराबर ध्यान रखना, क्योंकि महारानी की धर्मश्रद्धा बहुत अडिग है। कहीं हम उसके जाल में नहीं फँस जाएँ।

बौद्ध गुरु (2)—अरे राजन्! इसमें क्या बड़ी बात है ? एक चेतना को बौद्ध बनाना तो हमारे बायें हाथ का खेल है।

श्रेणिक—बहुत अच्छा महाराज!

(राजा श्रेणिक चले जाते हैं।)

बौद्ध गुरु (1)—(हर्ष से) आज तो महारानी के यहाँ भोजन के लिये जाना है।

बौद्ध गुरु (2)—हाँ, हाँ; वहाँ चेलना को समझाने का यह अच्छा अवसर है।

(अभयकुमार की बहिन आती है।)

बालिका—पधारिये महाराज! माताजी आपको भोजन के लिये बुला रही हैं।

बौद्ध गुरु—हाँ चलिये।

(बौद्ध गुरु जाते हैं। थोड़ी देर में अन्दर का पर्दा खुलता है, वहाँ चेलना और सखी बैठी हुई हैं।)

चेलना—सखी! आज तो ऐसी युक्ति करनी है कि बौद्ध गुरुओं की सर्वज्ञता का अभिमान चूर-चूर हो जाए।

सखी—बहिन! आपने कोई योजना विचारी है ?

चेलना—(कुछ धीरे से) हाँ सखी! अभी वे गुरु आयेंगे। मैं जब तुम्हें संकेत करूँ, तब तुम गुप-चुप जाकर प्रत्येक की एक-एक मोचड़ी छिपा देना।

सखी—अच्छा माता! बौद्ध गुरु आते ही होंगे।

(बालिका और बौद्ध गुरु आते हैं। अभयकुमार का पीछे से प्रवेश)

सखी—पधारो महाराज, यहाँ विराजो। (बौद्ध गुरु बैठते हैं।)

बौद्ध गुरु—आपके आमन्त्रण से आज बहुत प्रसन्नता हुई है। (बालिका की ओर संकेत करते हुए) यह बालिका कौन है ?

अभय—मेरी छोटी बहन है।

बौद्ध गुरु (2)—अच्छा, बहिन! इन गुरुजी को वन्दन तो करो।

बालिका—नहीं महाराज! मैं जैनगुरुओं के अतिरिक्त किसी भी अन्य गुरु को वन्दन नहीं करती हूँ।

बौद्ध गुरु—क्यों नहीं करती हो ?

बालिका—क्योंकि मैं, जो वीतरागी सर्वज्ञ है, उन्हें तथा उनकी वाणी को और जो उनके मार्ग पर चलनेवाले नग्न दिगम्बर मुनि हैं, उनको ही नमस्कार करती हूँ।

बौद्ध गुरु (2)—अरे! बौद्ध गुरु भी तो सर्वज्ञ हैं, फिर इन्हें नमस्कार क्यों नहीं करती।

बालिका—ऐसा! आप सर्वज्ञ हो ?

बौद्ध गुरु—हाँ, हम सब-कुछ जानते हैं।

बालिका—ठीक है, यदि आप सब-कुछ जानते हैं तो कह दो कि मेरे इस हाथ में क्या है ?

बौद्ध गुरु—(विचारपूर्वक) बहन! तेरे हाथ में सोने की मुहर है। सत्य है न ?

बालिका—असत्य! बिल्कुल असत्य। देखो महाराज! मेरे हाथ में तो कुछ भी नहीं है, क्यों? ऐसी ही है क्या आपकी सर्वज्ञता?

(बौद्ध गुरु के चेहरे पर कुछ विचित्र-सा भाव आकर चला जाता है।)

चेलना—अरे बेटी! अब यह चर्चा छोड़ो, उनको भोजन करने बैठाओ।

अभय—महाराज! भोजन करने पधारो।

(बौद्ध गुरु अन्दर जाते हैं। थोड़ी देर बाद भोजन करके वापस आ जाते हैं।)

(जब बौद्ध गुरु भोजन करते हैं, तब चेलना इशारे से सखी द्वारा उनकी मोचड़ी छिपवा देती है।)

बौद्ध गुरु—महारानीजी! आज यहाँ आने से हमको बहुत आनन्द हुआ और आपकी इतनी धर्मश्रद्धा देखकर तो और भी विशेष आनन्द हुआ।

अभय—(व्यंग्य से) क्यों महाराज? आपको यहाँ भोजन कराया, इसलिए क्या आप ऐसा मानते हो कि अब मेरी माताजी आपकी अनुयायी बन गई हैं?

बौद्ध गुरु—हाँ, कुँवरजी! हमको विश्वास है कि चेलना देवी जरूर बौद्धमत की भक्त बन जाएँगी और सम्पूर्ण भारत में बौद्धधर्म की विजय का डंका बज जाएगा।

चेलना—(तेज स्वर में) अरे महाराज! आपकी बात यह स्वप्न में भी बननेवाली नहीं है। आपके जैसे लाखों साधु आ जाएँ तो भी मुझको जैनधर्म से नहीं डिगा सकते।

बौद्ध गुरु—महाराजी! आप जानती हो कि श्रेणिक महाराज भी हमारे भक्त हैं। यदि आप बौद्धधर्म स्वीकार करोगी तो श्रेणिक महाराज आप से बहुत प्रसन्न होवेंगे और राज्य की सम्पूर्ण सत्ता आपके ही हाथ में रहेगी।

चेलना—(तेज स्वर में) क्या राजसत्ता के लोभ में, मैं मेरे जैनधर्म को छोड़ दूँ। आप ध्यान रखिए, यह कभी भी सम्भव नहीं होगा।

अभय—(तेज स्वर में) महाराज! यह राज्य तो क्या? तीन लोक का साम्राज्य मिलता हो तो भी वह हमारे जैनधर्म के सामने तो तुच्छ है। तीन लोक का राज्य भी हमको जैनधर्म से डिगाने में समर्थ नहीं, तो आप क्या डिगा सकते हैं?

बौद्ध गुरु (1)—महारानीजी! हम जानते हैं कि आप महाचतुर और बुद्धिमान हो। यदि आप जैसे समर्थजन जैनधर्म को छोड़कर हमारे अनुयायी बने तो सम्पूर्ण देश में हमारी कीर्ति फैल जाएगी, इसलिए आप चेतो और हमारी सलाह मानकर बौद्धमत स्वीकार करो। इसमें ही आपका हित है। यदि आप बौद्धमत को स्वीकार नहीं करोगी, तो आप पर भयंकर आफत आ पड़ेगी।

चेलना—(क्रोध से) क्या आप मुझको भय दिखाकर मेरा धर्म छुड़ाना चाहते हो? ऐसी तुच्छबुद्धि आप कहाँ से लाये? जैनधर्म के भक्त कैसे निःशंक और निर्भय होते हैं—इसका तो अभी आपको ज्ञान ही नहीं है। (शान्तभाव से) जरा सुनो! जैनधर्म के भक्त को जगत का कोई लोभ और जगत की कोई प्रतिकूलता भी धर्म से नहीं डिगा सकती है। वीतरागी जैनधर्म के भक्त सम्यग्दृष्टि जीव ऐसे निःशंक और निर्भय होते हैं कि तीन लोक में खलबली

मच जाए, ऐसा भयंकर वज्रपात हो तो भी अपने स्वभाव से च्युत नहीं होते।

बौद्ध गुरु (2)—(तेज स्वर में) सुन लो, महारानीजी! आपको क्षणिकवाद अंगीकार करना ही पड़ेगा, नहीं तो हम महाराज के कान भरेंगे और आपको अपमानित होकर यह राजपाट भी छोड़ना पड़ेगा, इसलिए आप अभी भी मान जाओ और बौद्धमत को स्वीकार कर लो।

चेलना—मेरे जैनधर्म के समक्ष मुझको जगत के किसी मान-अपमान की चिन्ता नहीं। लाखों-करोड़ों प्रतिकूलताओं का भय दिखाकर भी आप मुझे मेरे धर्म से नहीं डिगा सकते। हमारे धर्म में हम निःशंक हैं और जगत में निर्भय हैं, सुनो—

निःशंक हैं सद्दृष्टि बस, इसलिए ही निर्भय रहें।
वे सप्तभय से मुक्त हैं, इसलिए ही निःशंक हैं॥

अभय—और सुनो—

चाहे विविध बीमारियाँ, निजदेह में आकर बसें।
चाहे हमारी सम्पदा, इस वक्त ही जाती रहे॥
चाहे सगे सम्बन्धी परिजन, का वियोग मुझे बने।
चाहे दुश्मन हमको घेरे, ब्रह्माण्ड सारा हिल उठे॥
तो भी अरे जिनधर्म को, क्षण एक भी छोड़ूँ नहीं।
प्रतिकूलता आती रहें, निज रमणता छोड़ूँ नहीं॥

जगत की चाहे जितनी प्रतिकूलता आ जावे तो भी हम जैनधर्म से रंचमात्र भी डिगनेवाले नहीं हैं, तो आप जैसों की क्या सामर्थ्य है कि जो हमको डिगा सको?

बौद्ध गुरु (1)—(सरलता से) महारानीजी! आप भले ही अन्तरंग में जैनधर्म की श्रद्धा रखना... परन्तु बाहर में बौद्धमत स्वीकार कर हमको सत्कार दो, जिससे हम बौद्धमत का प्रचार कर सकें।

चेलना—अरे महाराज! अब अपनी बात बन्द करो। जैनधर्म को छोड़ने के सम्बन्ध में अब आप एक शब्द भी मत कहना। अब आपको ही क्षणिकवाद छोड़कर स्याद्वाद की शरण में आना ही पड़ेगा। अभी तक तो आपकी बात चली, परन्तु अब हमारे राज्य में यह नहीं चलेगा।

बौद्ध गुरु (2)—अरे चेलना! हमारे बौद्ध गुरु तो सर्वज्ञ हैं, इनका आप अपमान कर रही हो।

अभय—ठीक महाराज! आप कैसे सर्वज्ञ हो वह तो अन्दाज अभी पता पड़ जाएगा! अब चर्चा बन्द करो आप, और शान्ति से पधारो।

बौद्ध गुरु (1)—ठीक है! अभी तो जाते हैं, परन्तु समय आने पर आपको मालूम पड़ेगा कि बौद्ध गुरुओं का सामर्थ्य कितना है।

(बौद्ध गुरु चलना आरम्भ करते हैं।)

(मोचड़ी पहनने जाते हैं। एक-एक मोचड़ी गुम गई है। दूसरी मोचड़ी खोज रहे हैं।)

बौद्ध गुरु (1)—अरे, मेरी एक मोचड़ी गुम गयी!

बौद्ध गुरु (2)—मेरी भी एक मोचड़ी नहीं दिखती।

बौद्ध गुरु (1)—हमारी मोचड़ी कहाँ गयी?

बौद्ध गुरु (2)—मोचड़ी कौन उठा ले गया ? मोचड़ी, मोचड़ी !

(पीछे से अभयकुमार और चेलना आते हैं।)

अभय—क्या है महाराज ?

बौद्ध गुरु—कुमार ! हमारी मोचड़ी गुम हो गयी है।

चेलना—क्या आपकी मोचड़ी गुम हो गयी है ?

बौद्ध गुरु—हाँ, हमारी मोचड़ी कोई उठा ले गया है।

चेलना—(जोर से) अरे सैनिको !

(दो सैनिकों का प्रवेश)

सैनिक—(विनय से) आज्ञा, महारानीजी !

चेलना—इनकी यहाँ से कोई एक एक मोचड़ी उठा ले गया है, तुम अतिशीघ्र मोचड़ी की खोज करके लाओ।

सैनिक—जो आज्ञा।

(सैनिक बौद्ध गुरुओं की मोचड़ियों की खोज करने जाते हैं। चेतना, अभय और बौद्ध गुरु वही खड़े रहते हैं। कुछ क्षणों में सैनिक पुनः आ जाते हैं।)

सैनिक—महारानीजी ! सब जगह खोज की, पर मोचड़ियों का कहीं पता नहीं लग सका।

बौद्ध गुरु—(खिन्नता से) फिर यहाँ से मोचड़ी गई कहाँ ? यदि यहाँ से कोई उठा कर नहीं ले गया तो क्या धरती निगल गई ?

चेलना—(व्यंग्य से) हे महाराज ! अभी कुछ देर पहले आप ही कह रहे थे कि हम सर्वज्ञ हैं; फिर आप अपने ज्ञान से ही क्यों नहीं जान लेते कि आपकी मोचड़ी कहाँ गयी ?

(बौद्ध गुरु यह सुनकर क्षुब्ध हो जाते हैं।)

बौद्ध गुरु (1)—(खेद से) यह तो हम नहीं जान सकते।

अभय—(व्यंग्य से) देखो, महाराज! स्थूल वस्तु को भी आप नहीं जान सकते तो सर्वज्ञ होने का दावा किसलिए करते हो?

बौद्ध गुरु—परन्तु हमारी मोचड़ी गयी कहाँ?

अभय—परन्तु महाराज! अपने ज्ञान द्वारा ही जान लो न, कि मोचड़ी कहाँ गयी?

बौद्ध गुरु (1)—अवश्य किसी ने हमारी मोचड़ी गुम की है।

बौद्ध गुरु (2)—महारानीजी! आपने दगा कर हमारा ऐसा अपमान किया है।

चेलना—नहीं, नहीं महाराज! आपके अपमान के लिये हमने कुछ भी नहीं किया है, परन्तु हमने तो आपकी सर्वज्ञता की परीक्षा करके आपको बताया कि सर्वज्ञता के नाम से आप कैसे भ्रम का सेवन कर रहे हो।

अभय—(व्यंग्य से) हाँ, और अब आपके भक्त मेरे पिताजी को भी मालूम पड़ेगा कि आप उनके कैसे गुरु हैं?

बौद्ध गुरु (2)—(क्रोध से) महारानी! घर पर बुलाकर आपने हमारा अपमान किया है, परन्तु याद रखना कि हम भी हमारे अपमान का बदला लेकर रहेंगे।

(बौद्ध गुरु कुपित होकर तेजी से श्रेणिक के पास जाने के लिये श्रेणिक के कक्ष में चले जाते हैं।)

श्रेणिक—(खड़े होकर) पधारो महाराज! भोजन कर आये?

बौद्ध गुरु—हाँ राजन्!

श्रेणिक—महाराज! भोजन के बाद आपने चेलना को बौद्धधर्म का क्या उपदेश दिया?

बौद्ध गुरु—राजन्! चेलना रानी को बौद्धधर्म स्वीकार कराने के लिये हमने बहुत कुछ कहा और धमकियाँ भी दीं, परन्तु वह जैनधर्म की हठ जरा भी नहीं छोड़ती। वहाँ तो उल्टा हमारा ही अपमान हुआ।

श्रेणिक—क्या... अपमान हुआ, महाराज?

बौद्ध गुरु—राजन्! हमारी ही मोचड़ी छुपाकर हमको ही अज्ञानी ठहरा दिया।

श्रेणिक—आपको अपनी मोचड़ी का ध्यान क्यों नहीं आया?

बौद्ध गुरु—भोजन के स्वाद में इसका ख्याल ही नहीं रहा। रानी चेलना ने हमारी सर्वज्ञता की परीक्षा कर हमको झूठा ठहराया और भयंकर अपमान कर निकाल दिया।

श्रेणिक—महाराज! समय आने पर मैं भी चेलना के गुरु का अपमान कर इसका बदला लूँगा।

बौद्ध गुरु—हाँ राजन्! यदि तुम बौद्धधर्म के सच्चे भक्त हो तो जरूर ऐसा करना।

श्रेणिक—(दृढ़ता से) जरूर करूँगा।

(बौद्ध गुरु झुंझलाते हुए अपने मठ में चले जाते हैं।)

चौथा दृश्य

श्रेणिक द्वारा मुनिराज पर उपसर्ग

(राजा श्रेणिक राज भवन में अपने सामन्तों के साथ बैठे हैं। वहाँ दो सैनिक प्रवेश करते हैं। दोनों की वेशभूषा अलग-अलग है।)

श्रेणिक—चलो सामन्तों! आज तो शिकार करने चलें।

(तीनों जाते हैं। श्रेणिक एकटक दूर से पर्दे की ओर देख रहे हैं। तभी पर्दे के अन्दर हल्की लाइट जलती है, मुनिराज (चित्र) दिखायी देते हैं।)

श्रेणिक—अरे, वहाँ दूर-दूर क्या दिख रहा है? क्या कोई शिकार हाथ में आया?

सैनिक—जी हाँ महाराज! यह कोई शिकार लगता है।

दूसरा सैनिक—(ध्यान से देखकर) नहीं महाराज! यह तो कोई मनुष्य लगता है और उसके आसपास तेजोमय प्रभामण्डल भी दिख रहा है, इसलिए यह जरूर कोई महापुरुष होंगे।

श्रेणिक—चलो, नजदीक जाकर मालूम करें।

सैनिक—महाराज! वहाँ तो कोई ध्यान में बैठा है।

दूसरा सैनिक—(प्रसन्नता से) अरे! ये तो जैन मुनि हैं। अहा! देखो तो सही, इनकी मुद्रा कितनी शान्त है! मानो भगवान बैठे हों—वैसे ही लगते हैं।

श्रेणिक—अरे! क्या जैनमुनि? चेलना के गुरु?

सैनिक—जी हाँ, महाराज! ये ही महारानी चेलना के गुरु हैं।

श्रेणिक—(क्रोध से) बस, आज तो मैं मेरे बैर का बदला ले ही लूँगा। चेलना रानी ने मेरे गुरुओं का अपमान किया था, अब आज मैं उसके गुरु का अपमान करके बदला लूँगा।

दूसरा सैनिक—राजन्! राजन्!! आपको यह नहीं शोभता। मुनिराज कैसे शान्त और वीतरागी हैं! इन पर क्रोध नहीं करना चाहिए।

श्रेणिक—नहीं, नहीं, मैं तो अपने गुरु के अपमान का बदला लूँगा ही, तब ही मुझे चैन पड़ेगा। जाओ सैनिक! इनके ऊपर शिकारी कुत्ते छोड़ दो।

दूसरा सैनिक—महाराज! ऐसा पाप कार्य आपको शोभा नहीं देता।

श्रेणिक—(क्रोध से) मुझे शोभे या न शोभे, उसकी चिन्ता तुम मत करो, तुम आज्ञा का पालन करो।

(सैनिक कुत्ते छोड़ देता है; परन्तु कुत्ते शान्त होकर मुनिराज के चरणों में बैठ जाते हैं।)

सैनिक—महाराज! मुनिराज पर जो कुत्ते छोड़े थे, वे तो मुनिराज को कुछ किये बिना ही शान्त होकर उनके पास में बैठ गये। अब क्या करना?

दूसरा सैनिक—(दुःखी होकर) राजन्! अब भी चेतो; अरे, जिनकी शान्त मुद्रा देखकर कुत्ते जैसे जानवर भी शान्त और नम्र हो गये, ऐसे मुनिराज पर क्रोध करना आपको उचित नहीं।

श्रेणिक—नहीं, नहीं, ये तो कोई जादूगर हैं, उस जादू के प्रभाव से कुत्तों को शान्त कर दिया है, परन्तु मैं आज बदला लिये

बिना नहीं रहूँगा। (कुछ क्षण रुककर, इधर-उधर देखकर पुनः कहता है) सैनिको! देखो, यह भयंकर मरा हुआ काला नाग यहाँ लाओ और इस मुनि के गले में पहना दो। (प्रथम सैनिक सर्प लाकर श्रेणिक को देता है।)

श्रेणिक—लाओ! (वह सर्प लेकर मुनिराज के गले में डाल देता है और अत्यन्त हास्य करता है। हा.. हा.....हा...हा....। इस प्रसंग से दूसरा सैनिक बेभान जैसा होकर नीचे बैठ जाता है।)

श्रेणिक—बस! मेरे गुरु के अपमान का बदला मिल चुका। चलो सैनिको, यह समाचार मुझे अपने गुरुओं को भी देना है।

(तभी पर्दे में से; अरे... रे... रे...! धिक्कार! धिक्कार!! धिक्कार!!! परम वीतरागी जैनमुनि पर घोर उपसर्ग कर श्रेणिक राजा ने सातवें नरक का घोर पापकर्म बाँधा है।

—यह सुनकर श्रेणिक कुछ क्षुब्ध होता है, फिर भी श्रेणिक एवं प्रथम सैनिक वहाँ से बौद्ध गुरु को यह समाचार देने के लिये उनके मठ की ओर चले जाते हैं; परन्तु दूसरा सैनिक वहीं बैठा रहता है।)

(बौद्ध गुरु मठ में बैठे हैं। राजा श्रेणिक आकर वन्दन करते हैं।)

बौद्ध गुरु—क्यों महाराज! क्या कोई प्रसन्नता के समाचार लाये हो, जो इतने हर्षित नजर आ रहे हो?

श्रेणिक—(हर्ष से) हाँ महाराज! मैं आज जंगल में शिकार करने गया था, वहाँ मैंने एक जैन मुनिराज को देखा।

बौद्ध गुरु—ऐसा! फिर क्या हुआ?

श्रेणिक—फिर तो मैंने उनसे आपके अपमान का बदला ले लिया।

बौद्ध गुरु—किस तरह से ? क्या तुमने वाद-विवाद करके उन्हें पराजित कर दिया।

श्रेणिक—नहीं महाराज ! वाद-विवाद में जैनमुनियों को पराजित करना सरल नहीं है ? मैंने तो उनके ऊपर शिकारी कुत्ते छोड़े; परन्तु कौन जाने, वे कुत्ते भी शान्त होकर वहीं क्यों बैठ गये।

बौद्ध गुरु—ऐसा ! फिर क्या हुआ ?

श्रेणिक—महाराज ! फिर तो मैंने एक बड़ा सर्प लेकर उनके गले में पहना दिया।

बौद्ध गुरु—अरे राजन् ! तुमने यह क्या किया ? ऐसा अयोग्य कृत्य तुम्हें कैसे सूझा ?

श्रेणिक—महाराज ! मैंने आपके अपमान का बदला लिया है।

बौद्ध गुरु—नहीं, श्रेणिक ! इस तरह से बदला नहीं लिया जाता।

बौद्ध गुरु (2)—जो हो गया, वह तो हो ही गया। अब यह समाचार चेलना रानी को तुरन्त बता देना, इसलिए कि उसको भी मालूम हो जाए कि बौद्ध गुरुओं का अपमान करना सरल बात नहीं है।

श्रेणिक—हाँ महाराज ! मैं वहाँ ही जा रहा हूँ।

पाँचवाँ दृश्य

अभयकुमार के साथ धर्मचर्चा और रानी चेलना की हृदयव्यथा

(महारानी चेलना चिन्ता में बैठी हैं। अभयकुमार आते हैं।)

अभय—प्रणाम माताजी! किस चिन्ता में डूबी हो?

चेलना—पुत्र! आज मुझे अनेक प्रकार के बुरे-बुरे ख्याल आ रहे हैं, ऐसा लगता है जैसे कहीं जैनधर्म पर महासंकट आया हो। पुत्र! मेरे हृदय में बहुत व्याकुलता हो रही है।

अभय—माता! चिन्ता न करो। जैनधर्म के प्रताप से सर्व मंगल ही होगा, वहाँ सर्व संकट टलकर अवश्य धर्म की महाप्रभावना होगी।

चेलना—पुत्र! सुनसान राज्य में मेरे साधर्मी रूप में एक तू ही है। मेरे हृदय की व्यथा मैं तुम्हारे सिवाय किसको कहूँ? भाई! आज सुबह से ही महाराज भी नहीं आये, पता नहीं कौन जाने क्या खटपट चलती होगी?

अभय—माता! आज तो महाराज शिकार खेलने गये थे, और जब वहाँ से वापस आये, तब सीधे बौद्ध गुरुओं के पास जाकर महाराज ने उनसे कुछ बात कही थी और उसको सुनकर वे हर्षित थे।

चेलना—हाँ पुत्र! जरूर इसमें ही कुछ रहस्य होगा। अपने गुप्तचरों को अभी इसकी जानकारी करने भेजो।

अभय—हाँ माता! अभी भेजता हूँ। (कुछ दूर जाकर गुप्तचरों को आवाज देता है।) गुप्तचरो! गुप्तचरो!!

(दो गुप्तचरों का प्रवेश)

गुप्तचर—जी हजूर!

अभय—तुम अभी जाओ और नई—पुरानी कुछ विशेष बात हो तो मालूम करो और उसकी सूचना हमें दो।

गुप्तचर—जैसी आज्ञा। (गुप्तचर चले जाते हैं।)

अभय—माता! खबर करने के लिये गुप्तचर भेज दिए हैं। उनके समाचार आवें, तबतक इस प्रकार उदास बैठे रहने से तो अच्छा है—हम कुछ धार्मिक चर्चा करें, जिससे मन में प्रसन्नता हो।

चेलना—हाँ पुत्र! तेरी बात सत्य है। ऐसे दुःख संकट में धर्म ही शरण है।

अभय—माता! आप जैसी धर्मात्माओं पर भी संकट क्यों आते हैं?

चेलना—पुत्र! पूर्व में जिसने देव-गुरु-धर्म की कोई विराधना की हो, उसी कारण उसे ऐसी प्रतिकूलता के प्रसंग आते हैं।

अभय—हे माता! प्रतिकूल संयोगों में भी क्या जीव धर्म कर सकता है?

चेलना—हाँ पुत्र! कैसे भी प्रतिकूल संयोग हों, जीव धर्म कर सकता है, धर्म करने में बाहर के कोई भी संयोग जीव को बाधक नहीं होते।

अभय—पर अनुकूल संयोग हो तो धर्म करने में वह कुछ मदद तो कर सकता है न?

चेलना—नहीं पुत्र! धर्म तो आत्मा के आधार से है। संयोग के आधार से धर्म नहीं। संयोग का तो आत्मा में अभाव है।

अभय—फिर बाहर में अनुकूल और प्रतिकूल संयोग क्यों मिलते हैं?

चेलना—यह तो पूर्व भव में जैसे पुण्य-पाप भाव जीव ने किए हों, वैसे संयोग अभी मिलते हैं। पुण्य के फल में अनुकूल संयोग मिलते हैं। पाप के फल में प्रतिकूल संयोग मिलते हैं, परन्तु धर्म तो दोनों से भिन्न वस्तु है।

अभय—माताजी! इस विचित्र संसार में कोई अधर्मी जीव भी सुखी दिखता है और कोई धर्मी जीव भी दु:खी दिखता है। इसका क्या कारण है?

चेलना—पुत्र! अज्ञानी जीव को सच्चा सुख होता ही नहीं। आत्मा का अतीन्द्रिय सुख ही सच्चा सुख है। और वह ज्ञानी के ही होता है, अज्ञानी के तो उसकी गन्ध भी नहीं होती। अधर्मी जीवों के जो सुख दिखता है, वह वास्तव में सुख नहीं, मात्र कल्पना है, सुखाभास है। अज्ञानी के पूर्व पुण्य के उदय से बाह्य अनुकूलता हो तो भी वह वास्तव में दु:खी ही है। ज्ञानी के कदाचित् पाप के उदय से बाह्य में प्रतिकूलता दिखती हो तो भी वह वास्तव में सुखी ही है।

अभय—क्या प्रतिकूलता में ज्ञानी की श्रद्धा डिग नहीं जाती होगी?

चेलना—नहीं पुत्र! बिल्कुल नहीं, बाहर में कैसी भी प्रतिकूलता हो तो भी समकिती धर्मात्मा के सम्यक्-श्रद्धा और सम्यग्ज्ञान जरा

भी दूषित नहीं होता। अरे! तीन लोक में खलबली मच जाए तो भी समकिती अपने स्वरूप की श्रद्धा से जरा भी नहीं डिगते।

अभय—अहो माता! धन्य हैं ऐसे समकिती सन्तों को! ऐसे सुखी समकिती का अतीन्द्रिय आनन्द कैसा होगा?

चेलना—अहो, पुत्र अभय! वह समस्त इन्द्रिय सुखों से विलक्षण जाति का आनन्द होता है। जैसा सिद्ध भगवान का आनन्द, जैसा वीतरागी मुनिवरों का आनन्द, वैसा ही समकिती का आनन्द है। सिद्ध भगवान के समान आनन्द का स्वाद समकिती ने चख लिया है।

अभय—माता! इस सम्यग्दर्शन के लिये कैसा प्रयत्न होता है, वह मुझे भी विस्तार से समझाओ।

चेलना—वत्स! तुमने बहुत सुन्दर और अच्छा प्रश्न पूछा। सुनो, पहले तो अन्तर में आत्मा की इतनी रुचि जागे कि आत्मा की बात के अलावा उसे दूसरी किसी भी बात में रुचि न लगे और सद्गुरु का समागम करके तत्त्व का बराबर निर्णय करे, बाद में दिन-रात अन्तर में गहरा-गहरा मंथन करके भेदज्ञान का अभ्यास करे। बार-बार इस भेदज्ञान का अभ्यास करते-करते जब हृदय में उत्कृष्ट आत्मस्वभाव की महिमा आये, तब उसका निर्विकल्प अनुभव होता है, वेदन होता है। पुत्र! सम्यग्दर्शन प्रगट करने के लिये ऐसा प्रयत्न होता है। इसकी महिमा अपार है।

अभय—अहो माता! सम्यग्दर्शन की महिमा समझाने की तो आपने महान कृपा की है। अब इसकी भावना जगानेवाला कोई प्रेरक भजन भी सुनाओ न।

चेलना—जरूर बेटा ? तुम भी मेरे साथ दुहराना।

अभय—जी माता ! आप शुरु कीजिये।

(दोनों भजन गाते हैं)

धिक ! धिक !! जीवन समकित बिना।
दान शील तप व्रत श्रुत पूजा, आतमहित न एक गिना ।।टेक ।।
ज्यों बिनु कंत कामिनी शोभा, अंबुज बिनु सरवर सूना।
जैसे बिना एकड़े बिंदी, त्यों समकित बिनु सरब गुना ।।2 ।।
जैसे भूप बिना सब सेना, नीव बिना मन्दिर चुनना।
जैसे चंद बिहूनी रजनी, इन्हें आदि जानो निपुना ।।3 ।।
देव-जिनेन्द्र साधु-गुरु करुणा-धर्म-राग व्योहार भना।
निहचै देव धरम-गुरु आतम, 'द्यानत' गहि मन-वचन-तना ।।4 ।।

(भजन पूरा होने पर कुछ क्षण उस पर विचार करते हैं। फिर...)

चेलना—बेटा अभय ! अभी तक कोई समाचार नहीं आए ?

अभय—(बाहर की ओर झांकते हुए) माता, एक गुप्तचर आ रहा हैं।

(गुप्तचर आते हैं।)

गुप्तचर—(खेद से) माता-माता ! एक गम्भीर घटना घट गयी है—उसके समाचार देने के लिये महाराजजी स्वयं ही आ रहे हैं।

(श्रेणिक राजा का प्रवेश)

चेलना—पधारो महाराज ! क्या बात है ? आज... ?

श्रेणिक—हाँ देवी ! आज मैं जंगल शिकार करने गया था। वहाँ एक विचित्र-सा बनाव बन गया।

चेलना—क्या बात है महाराज ? जल्दी कहो।

श्रेणिक—वहाँ जंगल में हमने एक जैनमुनि को देखा।

चेलना—(प्रसन्नता से) ऐसा ? मेरे गुरु के दर्शन हुए, वाह ! बाद में क्या हुआ ?

श्रेणिक—बाद में तो जैसे आपने मेरे गुरु का अपमान किया, वैसे ही मैंने भी आपके गुरु का अपमान कर बदला ले लिया।

चेलना—(दुःखी होकर) अरेरे, आपने यह क्या किया महाराज ?

श्रेणिक—सुनो देवी ! पहले तो हमने उनके ऊपर शिकारी कुत्ते छोड़े, परन्तु वे कुत्ते तो उनको देखते ही एकदम शान्त हो गये।

चेलना—(हर्ष से) वाह, धन्य मेरे गुरु का प्रभाव ! धन्य वे वीतरागी मुनिराज !!

श्रेणिक—चेलना ! पूरी बात तो सुनो। बाद में तो मैंने एक भयंकर काला नाग लेकर तुम्हारे गुरु के गले में डाल दिया।

चेलना—हैं ? क्या ? मेरे गुरु के गले में आपने नाग डाला ? अरेरेरे... ! धिक्कार है तुम्हें, धिक्कार इस संसार को। अरेरे... ! इससे तो मैंने कुँवारी रहकर दीक्षा ले ली होती तो अच्छा रहता। अरे राजन ! आपने यह क्या किया ?

अभय—धैर्य रखो, माता ! अब हमें शीघ्र ही कोई उपाय करना चाहिए।

चेलना—अरे भाई ! अपने गुरु के ऊपर घोर उपसर्ग आया, ऐसी रात्रि में हम क्या करेंगे ?

जंगल में कहाँ जाएँगे ? मुनिराज को कहाँ खोजेंगे ? अरे, उन मुनिराज का क्या हुआ होगा ? हे भगवान् ! ....(कहते-कहते बेहोश हो जाती है।)

अभय—(अतिशीघ्रता से) माता! उठो, उठो!! ऐसे गम्भीर प्रसंग में आप धैर्य खोओगी, तो मैं क्या करूँगा? हे माता! चेतो!! हम जल्दी ही कोई उपाय करते हैं।

(महारानी चेलना को हाथ पकड़कर उठाता है।)

चेलना—चलो बेटा चलो, हम अभी जंगल में जाकर मुनिराज के उपसर्ग को दूर करेंगे।

श्रेणिक—देवी! आप शोक मत करो। आपके गुरु तो कभी के सर्प को दूर फैंककर चले गये होंगे।

चेलना—नहीं-नहीं राजन्! यह तो आपका भ्रम है। कैसा भी भयंकर उपद्रव हो जाए तो भी हमारे जैनमुनि ध्यान से चलायमान नहीं होते। यदि वे सच्चे मुनिराज होंगे तो अभी भी वे वहीं वैसे ही विराज रहे होंगे। वे चैतन्य के ध्यान में अचल मेरु पर्वत समान बैठे होंगे।

अभय—माता! माता! अब जल्दी चलो। अपने गुरु का क्या हुआ होगा? अरे! ऐसे शान्त मुनिराज को हम सब देखेंगे?

चेलना—चलो पुत्र! इसी समय हम उनके पास जाएँ और उनका उपसर्ग दूर करें।

(वे चलना प्रारम्भ करते हैं और श्रेणिक रोकता है।)

श्रेणिक—अरे! ऐसी रात्रि में तुम जंगल में कहाँ जाओगी, अपन सुबह चलकर मालूम कर लेंगे, मैं भी आपके साथ चलूँगा।

चेलना—नहीं राजन् अब हम एक क्षण भी नहीं रुक सकते। अरेरे...! आपने भारी अनर्थ किया है। महाराज! हम अभी इसी समय जंगल में जाएँगे और मुनिराज को खोजकर उनका उपसर्ग

दूर करेंगे। मुनिराज का उपसर्ग दूर न हो, तब तक हमको चैन नहीं पड़ेगी, इसलिए हमने प्रतिज्ञा की है कि जब तक हमको उन मुनिराज के दर्शन न हों और उनका उपसर्ग दूर न हो, तब तक हमारे सर्व प्रकार अन्न-पानी का त्याग है। (कुछ रुककर अभयकुमार की ओर देखते हुए) पुत्र! चलो। (चलना पुनः प्रारम्भ करते हैं।)

श्रेणिक—खड़ी रहो देवी! मैं भी आपके साथ आता हूँ और आपको मुनिराज का स्थान बताता हूँ।

अभय—बहुत अच्छा, पिताजी! चलो।

छठा दृश्य

उपसर्ग-विजयी मुनिराज का उपसर्ग दूर एवं राजा श्रेणिक द्वारा जैनधर्म अंगीकार

(सभी लाइटें बन्द कर दी जाती हैं। सब हाथ में टार्च लेकर चलते हैं। अन्दर जाकर पर्दे की दूसरी तरफ से मुनिराज को खोजते-खोजते बाहर आते हैं। तथा मन्द-मन्द ध्वनि से निम्न गीत गुन-गुनाते हैं। फिर धीरे-धीरे प्रकाश होता है अर्थात् सबेरा हो जाता है और मुनिराज (चित्र) दिखते हैं।)

चेलना—अरे देखो, देखो! मुनिराज तो ऐसे के ऐसे ध्यान में विराज रहे हैं।

अभय—जय हो! यशोधर मुनिराज की जय हो!

चेलना—कुमार! चलो, सर्प को शीघ्र ही दूर करें।

(श्रेणिक हाथ जोड़कर खड़े-खड़े देख रहे हैं। चेलना तथा अभय दोनों लकड़ी से सर्प को दूर कर रहे हैं।)

अभय—अहा मुनिराज! धन्य है आपकी वीतरागता!!

चेलना—पुत्र! चलो, अब मुनिराज के शरीर को साफ करें।

(पीछी से शरीर को साफ करते हैं। बाद में वन्दन करके बैठ जाते हैं। श्रेणिक एक तरफ स्तब्ध से खड़े हैं।)

चेलना—बैठो महाराज! मुनिराज तो अभी ध्यान में हैं। अभी उनका ध्यान पूरा होगा। (श्रेणिक बैठ जाते हैं।)

चेलना—(अभयकुमार से) हम मुनिराज की भक्ति करतें।

अभय—जरूर माता! (भक्ति प्रारम्भ कर देते हैं।)

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके राग-द्वेष नहीं तन में।।टेक।।
ग्रीषम ऋतु शिखर के ऊपर, मगन रहे ध्यानन में।।1।।
चातुर्मास तरुतल ठाड़े, बूँद सहे छिन-छिन में।।2।।
शीत मास दरिया के निारे, धीर धरें ध्यानन में।।3।।
ऐसे गुरु को मैं नित प्रति ध्याऊँ, देत ढ़ोक चरनन में।।4।।

चेलना—(हाथ जोड़कर गद्‌गद् भाव से) हे प्रभो! अब उपसर्ग सर्व प्रकार से दूर हुआ है। प्रभो! अब ध्यान छोड़ो, हमारे ऊपर कृपादृष्टि करो। प्रभो! हम बालकों पर कृपा करो।

मुनिराज—धर्मवृद्धिरस्तु! आप सबको धर्मवृद्धि हो।

(मुनिराज के ये शब्द पर्दे में से आते हैं।)

श्रेणिक—अरे, क्या मुनिराज ने मुझको भी धर्मवृद्धि का आशीर्वाद दिया?

चेलना—हाँ महाराज! जैनमुनि तो वीतरागी होते हैं। उनके शत्रु और मित्र के प्रति समभाव होता है। चाहे कोई पूजा करे, चाहे निंदा करे तो भी उनके प्रति समभाव है। चाहे हीरों का हार, चाहे फणीधर नाग, इन दोनों में भी उनको समभाव होता है। अहो! यही तो है इन मुनिवरों की महानता।

अरि-मित्र महल-मशान, कंचन-काँच निन्दन-थुति करन।
अर्घावतारण असिप्रहारण, में सदा समता धरन।।

***

शत्रु मित्र प्रति वर्ते समदर्शिता,
मान अमाने वर्ते वही स्वभाव जो।

जीवित के मरणे नहिं न्यूनाधीकता;
भव मोक्षे पण शुद्ध वर्ते समभाव जो॥

श्रेणिक—अहो देवी! धन्य है इन मुनिराज को। वास्तव में जैन मुनियों के समान जगत में दूसरा कोई नहीं। अरे रे! मुझ पापी ने यह कैसा महा भयंकर अपराध किया?

चेलना—नाथ! आपने कैसा भी उपसर्ग किया, पर ये वीतरागी मुनिराज तो स्वयं के क्षमा धर्म में अडिग ही रहे हैं और आपके ऊपर भी करुणा दृष्टि रखकर आपको धर्मवृद्धि का आशीर्वाद दिया है। प्रभो! वीतरागी मुनिवरों का यह जैनधर्म ही उत्तम है। आप इस धर्म की शरण ग्रहण करो। जैनधर्म की शरण से कैसे भी भयंकर पापों का नाश हो जाता है।

अभय—पिताजी! अब अन्तर की उमंग से जैनधर्म को स्वीकार करो और सर्व पापों का प्रायश्चित्त कर लो। चेलना माता के प्रताप से आपने यह धन्य अवसर पाया है।

श्रेणिक—(गद्‌गद् होकर) प्रभो! प्रभो! मेरे अपराध क्षमा करो प्रभो! इस पापी का उद्धार करो। अरे रे! जैनधर्म की विराधना करके मैंने भयंकर अपराध किया, इस पाप से मैं कब छूटूँगा। प्रभो! मुझको शरण दो!! मैं अब जैनधर्म की शरण ग्रहण करता हूँ।

मुझको अहिंरत भगवान की शरण हो।
मुझको सिद्ध भगवान की शरण हो।
मुझको जैन मुनिवरों की शरण हो।
मुझको जैनधर्म की शरण हो।

***

प्रभु पतित पावन मैं अपावन, चरण आयो शरण जी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरण जी।
तुम ना पिछान्यो आज मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।
धन घड़ी यो धन दिवस यो, ही धन जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो।
मैं हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, विनवूँ तब चरण जी।
करना क्षमा मुझ अधम को, तुम सुनो तारनतरन जी॥

हे नाथ! मैं मन से, वचन से, काया से, सर्व प्रकार से, आत्मा के प्रदेश-प्रदेश में पवित्र जैनधर्म को स्वीकार करता हूँ। प्रभो! मेरे अपराध क्षमा करो।

मुनिराज—हे राजन्! जैनधर्म के प्रताप से तुम्हारा कल्याण हो, धर्म की वृद्धि हो। परिणाम का पलटना, यही सच्चा प्रायश्चित्त है। राजन्! तुम्हारा धन्य भाग्य है जो कि ऐसे परम पावन जैनधर्म की प्राप्ति हुई। अब सर्व प्रकार से उसकी आराधना और प्रभावना करना।

श्रेणिक—प्रभो! आपने मेरा उद्धार किया है, आज मेरा नया जन्म हुआ है। नाथ! अब मेरे सम्पूर्ण राज्य में जैनधर्म का ही झण्डा फहरायेगा, जगह-जगह जिनमन्दिर होंगे, इस महान जैनधर्म को छोड़कर दूसरे किसी अन्य धर्म का मैं स्वप्न में भी आदर नहीं करूँगा।

चेलना—(हर्ष से) प्रभो! आज हमारे आनन्द का पार नहीं। आपके प्रताप से जैनधर्म की जय हुई है। प्रभो! मुझको यह बतावें कि श्रेणिक महाराज की मुक्ति कब होगी?

मुनिराज—तुमने उत्तम प्रश्न पूछा है। सुनो! कुछ ही समय

बाद इस राजगृही नगरी में त्रिलोकीनाथ महावीर भगवान पधारेंगे, उस समय प्रभुजी के चरण-कमल में श्रेणिक महाराज क्षायिक सम्यक्त्व प्रकट करेंगे। इतना ही नहीं, तीर्थंकर भगवान के चरणकमल में इन्हें तीर्थंकरनामकर्म प्रकृति का बन्ध होगा और वे आनेवाली चौबीसी में भरतक्षेत्र के प्रथम तीर्थंकर होकर मोक्ष पधारेंगे।

चेलना—अहो नाथ! आपके श्रीमुख से मंगल बात जानकर हमारा आत्मा हर्ष से नाच उठा है।

श्रेणिक—धन्य प्रभो! आपके श्रीमुख से मेरे मोक्ष की बात सुनकर मेरा आत्मा आनन्द से उछल गया है। प्रभो! मानो मेरे हाथ में मोक्ष आ गया हो—ऐसा मुझको आनन्द होता है।

अभय—माता! अन्त में आपकी भावना सफल हुई और जैनधर्म की जय हुई, जिससे मुझको अपार आनन्द हुआ है।

(जब दीवानजी ने यह समाचार सुना कि महाराज और महारानी आदि जंगल में गये हैं, तब वे भी जंगल की ओर चल दिये और वहाँ पहुँच गये, जहाँ सभी बैठे हुए थे।)

चेलना—लो, दीवानजी कोई मंगल समाचार लेकर आये हैं।

दीवानजी—नमोऽस्तु गुरुवर! महाराज और महारानी को भी मेरा प्रणाम। मैं एक अति शुभ समाचार लेकर आया हूँ महारानीजी!

चेलना—कहो, क्या शुभ समाचार लाए हो? क्या मन्दिर बनकर तैयार हो गया है?

दीवानजी—जी महारानीजी! आपकी आज्ञा के अनुसार भव्य जिनमन्दिर बनकर तैयार हो गया है। अपने राज्य में जितने मन्दिर

हैं, उन सबमें यह जिनमन्दिर उत्तम है। इसको बनाने में एक करोड़ सोने की मोहरें खर्च हुई हैं। अब उसके प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारी करनी है।

श्रेणिक—दीवानजी! आज से ही महोत्सव की तैयार करो, सम्पूर्ण नगरी को सुन्दर बनाओ और जिनमन्दिर पर सोने के कलश चढ़ाओ, जिनेन्द्र भगवान की प्रतिष्ठा का महोत्सव ऐसा धूमधाम से होना चाहिए कि सम्पूर्ण नगरी जैनधर्म की प्रभावना से आनन्दित हो उठे, राज्य भण्डार में धन की कोई कमी नहीं है। इस महोत्सव में जितना चाहें, उतना खर्च करो, परन्तु पंच कल्याणक महोत्सव एकदम अपूर्व होना चाहिए। अपना कैसा धन्य भाग्य है कि पंच कल्याणक महोत्सव के उत्तम प्रसंग में अपने आँगन में मुनिराज भी विराज रहे हैं।

चेलना—महाराज! धन्य है आपकी भावना! चलो हम भी महोत्सव की तैयारी करें।

अभय—ठहरिये, हम भक्ति कर लें।

सन्मार्गदर्शी बोधिदाता, कृपा अति बरसावते।
आश्रयी करुणाभाव से, मुझ रंक को उद्धारते॥
विमल ज्ञानी शांतमूर्ति, दिव्यगुण से दीप्त हो।
मुनिवर चरण में नम्रता से, कोटिशः मम शीस हो॥

ॐ ह्रीं श्री वीतरागी मुनिराज चरण कमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री भूत-वर्तमान-भावी समस्त तीर्थंकरदेवाय चरण कमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेलना—बोलो, श्री यशोधर मुनिराज की जय!

श्रेणिक—बोलो, परम-पवित्र जैनधर्म की जय!

सातवाँ दृश्य

श्रेणिक द्वारा जैनधर्म की विजय घोषणा

(बड़े ही धूमधाम से पंच कल्याणक महोत्सव सम्पन्न होता है, और जैनधर्म की विशाल रथयात्रा निकाली जाती है, जिसे देखकर सम्पूर्ण प्रजा अपने को धन्य मानने लगती है, और इसका सम्पूर्ण श्रेय महारानी चेलना को देते हुए आपस में उनकी प्रशंसा करने लगते हैं। तभी राजा श्रेणिक भी खड़े होकर घोषणा करते हैं।)

श्रेणिक—धर्मप्रेमी समाज! आज मैं नयी बात विज्ञापित करता हूँ। आप सभी जानते हो कि मैं अभी तक बौद्धमत का अनुयायी था, परन्तु अब मुझको महारानी चेलना के प्रताप से सत्य वस्तु स्वरूप की पहचान हुई है और परम-पावन जैनधर्म की प्राप्ति हुई है। श्री जिनेन्द्र भगवान का शासन ही इस संसार में शरणभूत है। अभी तक अज्ञान में मैंने ऐसे पवित्र जैनधर्म का अनादर किया, उसका मुझको बहुत पश्चात्ताप हो रहा है। अब मैंने बौद्धधर्म छोड़कर जैनधर्म को स्वीकार किया है। अब सर्वज्ञ भगवान ही मेरे इष्टदेव हैं और वीतरागी निर्ग्रन्थ मुनिराज ही मेरे गुरु हैं। अब से राजधर्म भी जैनधर्म ही रहेगा और राजमहल के ऊपर जैनधर्म का ही झण्डा फहरायेगा। (झण्डा हाथ में लेकर ऊँचा करते हैं; पुष्पवृष्टि होती है, बाजे बजते हैं।)

सभाजन—धन्य हो! धन्य हो महाराज!! आप धन्य हो!!! **(एक साथ हर्षनाद)**

चेलना—(खड़ी होकर) धर्मप्रेमी बन्धुओ! महाराज ने जैनधर्म

के स्वीकारने की सूचना दी है, इससे मुझको अपार हर्ष हो रहा है। इस जगत में कल्याणकारी एक जैनधर्म ही है। इस घोर संसार में सज्जनों को शरणभूत एकमात्र यह जैनधर्म ही है। हे भव्यजीवो! यदि आप इस भव-भ्रमण के दु:ख से थक चुके हो और आत्मा की मोक्षदशा प्रकट करना चाहते हो तो इस सर्वज्ञ प्रणीत जैनधर्म की शरण में आओ।

दीवानजी—(खड़े होकर) महाराज और महारानी ने इस जैनधर्म सम्बन्धी जो सूचना दी है, उससे मुझको अत्यन्त आनन्द हो रहा है। अब इस संसार-समुद्र से छूटने के लिये मैं भी अत्यन्त उल्लासपूर्वक जैनधर्म को स्वीकार करता हूँ। अपने महाराज ने अनेक प्रकार से परीक्षा करके जैनधर्म को स्वीकार किया है, इसलिए समस्त प्रजाजन भी स्वयं आत्महित के लिये इस जैनधर्म को स्वीकार करो—ऐसी मेरी अन्त:करण की भावना है।

सैनिक—(हाथ जोड़कर) महाराज! मैं जैनधर्म को स्वीकार करता हूँ।

सैनिक—(हाथ जोड़कर) मैं भी जैनधर्म को स्वीकार करता हूँ।

(बौद्ध गुरु आते हैं।)

बौद्ध गुरु—(हाथ जोड़कर, गद्‌गद भाव से) महाराज! हमको क्षमा करो। हमने अभी तक दंभ करके आपको ठगा। अरे रे! पवित्र जैनधर्म की निन्दा करके हमने घोर पाप का बंध किया। राजन्! अब हमें हमारे पापों का पश्चात्ताप हो रहा है। हमारे पापों को क्षमा करो। हमारा उद्धार करो। अब हम जैनधर्म की शरण लेते हैं।

(श्रेणिक राजा चेलना के सामने देखते हैं।)

चेलना—महाराज! अब आपको इस सत्य की सच्ची पहिचान हुई है, यह आपका सद्भाग्य है। जैनधर्म तो पावन है। इसकी शरण में आये पापी प्राणियों का भी उद्धार हो जाता है।

बौद्ध गुरु—(हाथ जोड़कर) देवी! हमारे अपराध को क्षमा करो। हम भ्रम में थे। आपने ही हमारा उद्धार किया है। कुमार्ग को छुड़ाकर आपने ही हमको सच्चे मार्ग में स्थापित किया है। माता! आपका उपकार हम कभी नहीं भूलेंगे।

(मंच पर नगरसेठ आता है।)

दीवानजी—लो, ये नगरसेठ भी पधार गये।

श्रेणिक—पधारो नगरसेठ! पधारो!

नगरसेठ—महाराज! मैं एक मंगल बधाई देने आया हूँ। चेलना माता के प्रताप से आपने जैनधर्म अंगीकार किया—इस समाचार से सम्पूर्ण नगरी में आनन्द फैल गया है, सम्पूर्ण नगरी जैनधर्म के जयकारे से गुंजायमान हो रही है। महाराज! मुझको यह बताते हुए बहुत आनन्द हो रहा है कि सम्पूर्ण नगरी के समस्त प्रजाजन जैनधर्म अंगीकार करने को तैयार हो गये हैं। आज से मैं और समस्त प्रजाजन जैनधर्म को स्वीकार करते हैं।

चेलना—अहो! धन्य है, एक-एक प्रजाजन धन्य है।

नगरसेठ—महराज! दूसरी बात यह है कि समस्त प्रजाजनों को महापवित्र जैनधर्म की प्राप्ति चेलना माता के प्रताप से ही हुई है, इसलिए हम इनका सम्मान करते हैं और उन्हें समस्त प्रजा की धर्ममाता के रूप में स्वीकार करते हैं।

(हर्षनाद)

श्रेणिक—बराबर है सेठजी! मुझको और समस्त प्रजा को महारानी के प्रताप से ही जैनधर्म की प्राप्ति हुई है। आपने उनका सम्मान किया है, वह योग्य ही है।

(दूर से या पर्दे से वाद्ययंत्रों का नाद।)

(सामने से श्रीमाली प्रवेश करता है।)

माली—बधाई, महाराज बधाई!

महाराज! सबको आनन्द उत्पन्न हो, ऐसी बधाई लाया हूँ। त्रिलोकीनाथ देवाधिदेव भगवान श्री महावीर परमात्मा का समवसरण सहित अपनी नगरी के उद्यान में पदार्पण हुआ।

(श्रेणिक सहित सब खड़े हो जाते हैं।)

श्रेणिक—अहो! भगवान पधारे!! धन्य घड़ी! धन्य भाग्य! नमस्कार हो त्रिलोकीनाथ भगवान को!!

(जरा-सा चलकर) नमोऽस्तु! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!!!

चेलना—अहो, धन्य अवतार! साक्षात् भगवान मेरे आँगन में पधारे। मेरे हृदय के हार पधारे। हृदय के हार आओ! त्रिलोकीनाथ पधारो! सेवक को पावन करके भव से पार उतारो।

अभय—अहो, मेरे नाथ पधारे! मुझको इस संसार समुद्र से छुड़ाकर मोक्ष में ले जाने के लिये मेरे नाथ पधारे।

चेलना—चलो महाराज! हम भगवान के दर्शन करने चलें, और भगवान का दिव्य उपदेश प्राप्त कर पावन होवें।

श्रेणिक—हाँ, देवी चलो! सम्पूर्ण नगरी में मंगल भेरी बजवाओ कि सब जन भगवान के दर्शन करने के लिये आयें। लो माली! यह आपको बधाई का इनाम।

(राजा गले में से हार आदि निकालकर देते हैं और तत्काल ही समस्त प्रजाजनों के साथ बड़े ही धूमधाम से हाथ में पूजा की थाली लेकर प्रभु दर्शन को चले जाते हैं।)

चलो चलो, सब हिल-मिल कर आज,
महावीर वन्दन को जावें।
चलो चलो, सब हिल-मिल कर आज,
प्रभुजी के वन्दन को जावें।
गाजे-गाजे जिनधर्म की जयकार,
वैभारगिरि पर जावें।

(गाते-गाते जाते हैं और पर्दे के पीछे जाकर फिर आते हैं। रास्ते में दूसरे अनेक मनुष्य साथ में मिल जाते हैं। पर्दा ऊँचा होता है और भगवान दिखते हैं।)

श्रेणिक—बोलिये, महावीर भगवान की जय!

(सब वन्दन करके बैठते हैं। स्तुति करते हैं।)

मंगल स्वरूपी देव उत्तम हम शरण्य जिनेश जी।
तुम अधमतारण अधम मम लखि मेट जन्म कलेश जी॥
संसृतिभ्रमण से थकित लखि निजदास की सुन लीजिये।
सम्यक् दरश वर ज्ञान चारित पथविहारी कीजिये॥

चेलना—ॐ ह्रीं भगवान श्री वर्धमान जिनेन्द्रदेवचरणकमल-पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(थोड़ी देर के लिये एकदम शान्ति छा जाती है।)

श्रेणिक—(खड़े होकर) हे प्रभो! आत्मा की मुक्ति का मार्ग क्या है ? कृपया हमें बताकर कृतार्थ करें।

(पर्दे में से दिव्यध्वनि की आवाज आती है।)

ओ.....म्...... !!

द्रव्य-गुण-पर्याय से जो जानते अरहंत को।
वे जानते निज आत्मा दृगमोह उनका नाश हो॥

अहो जीवो! द्रव्य से, गुण से और पर्याय से अरिहन्त भगवान के स्वरूप को जो जीव जानता है, वह आत्मा का वास्तविक स्वरूप जानता है और उसक दर्शनमोह अवश्य क्षय को प्राप्त होता है।

हे जीवो! आपका आत्मा भी अरिहन्त भगवान जैसा ही है। जैसा अरिहन्त भगवान का स्वभाव है, वैसा ही तुम्हारा स्वभाव है। उस स्वभाव सामर्थ्य को आप पहचानो, उसकी प्रतीति करो। यह ही मुक्ति का मार्ग है। समस्त अरिहन्त भगवन्तों ने ऐसे ही मार्ग को अपनाकर मुक्ति प्राप्त की है और जगत को भी ऐसा ही मुक्ति के मार्ग का उपदेश दिया है।

हे जीवो! आप भी पुरुषार्थ से इस मार्ग को अपनाओ।

श्रेणिक—अहो, प्रभो! आपका दिव्य उपदेश सुनकर हम पावन हो गये हैं, हमारा जीवन धन्य हुआ।

अभय—प्रभो! इस संसार-समुद्र से मेरी मुक्ति कब होगी?

दिव्यध्वनि—(पर्दे में से) हे भव्य! आप अत्यन्त निकट भव्य हो, इस भव में ही आपकी मुक्ति होगी।

अभय—प्रभो! मेरे पिताजी को मुक्ति कब होगी?

दिव्यध्वनि—(पर्दे में से) श्रेणिक महाराज को क्षायिक सम्यक्त्व हुआ है। उन्होंने अभी तीर्थंकरनामकर्म का बंध किया है। एक भव बाद ये तीर्थंकर होकर मोक्ष पधारेंगे।

चेलना—अहो! धन्य-धन्य!!

(सब खड़े होकर चले जाते हैं। पर्दा बन्द होता है।)

आठवाँ दृश्य

महारानी चेलना और अभयकुमार का वैराग्य

(महाराज श्रेणिक बैठे हैं, वहाँ अभयकुमार आता है।)

अभय—पिताजी! भगवान की दिव्यध्वनि में जब से मैंने यह सुना है कि मैं इसी भव का मोक्षगामी हूँ, तभी से मेरा मन इस संसार से उठ गया है। मैं अब यह संसार स्वप्न में भी देखूँगा नहीं, बाहर के भाव तो अनन्त बार किये। अब मेरा परिणमन अन्दर ढलता है। अब तो मैं मुनि होकर आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्द का भोग करूँगा। पिताजी! मुझे स्वीकृति प्रदान करो।

श्रेणिक—अरे कुमार! ऐसी छोटी उम्र में क्या तुम दीक्षा लोगे? तुम्हारे बिना इस राज्य का कार्यभार व वैभव कौन सँभालेगा? बेटा! अभी तो मेरे साथ राज्य भोगो, बाद में दीक्षा लेना।

अभय—नहीं-नहीं, पिताजी! चैतन्य के आनन्द के सिवाय अब और कहीं मेरा मन एक क्षण भी नहीं लगता। अब तो मैं एक क्षण का भी विलम्ब किये बिना आज ही चारित्रदशा को अंगीकार करूँगा।

श्रेणिक—अहो, पुत्र! धन्य है तेरे वैराग्य को और दृढ़ता को। पुत्र! तेरे वैराग्य को मैं नहीं रोक सकता। तेरी चेलना माता स्वीकृति दे तो खुशी से जाओ और आत्मा का पूर्ण हित करो।

(अब अभयकुमार माता चेलना के पास जाता है। चेलना देवी स्वाध्याय कर रही हैं।)

मिथ्यात्व आदिक भाव तो चिरकाल से भाये अरे।
सम्यक्त्व-आदिक भाव पर क्षण भी कभी भाये नहीं॥

अहो, रत्नत्रय की आराधना करके मैं इस भव-समुद्र से छूटूँ—ऐसा धन्य अवसर कब आयेगा?

अभय—माता! आप जैसी आत्महित की मार्गदर्शक माता मुझको मिली—यह मेरा धन्य भाग्य है। हे माता! आप मेरी अन्तिम माता हो। अब इस संसार में मैं दूसरी माता बनानेवाला नहीं हूँ। संसार में डूबे हुए इस आत्मा का अब उद्धार करना है। हे माता! आज ही चारित्रदशा अंगीकार करके मैं समस्त मोह का नाश करूँगा और केवलज्ञान प्रगट करूँगा। इसलिए हे माता! मुझको आज्ञा प्रदान करो।

चेलना—अहो पुत्र! धन्य है तेरी भावना को!! जाओ पुत्र, प्रसन्नता से जाओ और पवित्र रत्नत्रय धर्म की आराधना करके अप्रतिहतरूप से केवलज्ञान प्राप्त करो। पुत्र! मैं भी तुम्हारे साथ ही दीक्षा लूँगी। अब इस भवभ्रमण से बस हो, अब तो इस स्त्री पर्याय को छेदकर मैं भी अल्पकाल में केवलज्ञान प्राप्त करूँगी।

अभय—अहो माता! आपके वैराग्य को धन्य है। चलो, दीक्षा लेने के लिए भगवान के समवसरण में चलें।

(दोनों गाते-गाते भावना करते हैं।)

चलो आज श्री वीर जिनचरण में
बनकर संयमी रहेंगे निज ध्यान में।
राजगृही नगरी में श्रीजिन विराजे
समवशरण मध्य जिनराज शोभते

चलो आज श्री वीर जिनचरण में
ॐध्वनि सुनेंगे श्री वीरप्रभु की
रहेंगे मुनिवरों के पावन चरण में
चलो आज श्री वीर जिनचरण में
छोड़ के परसंग आज दीक्षा धरेंगे
राजपाट छोड़ि के संग वीर रहेंगे
वन जंगल में हम विचरण करेंगे
चलो आज श्री वीर जिनचरण में

(गाते-गाते दोनों चले जाते हैं। पर्दा बन्द होता है।)

सूत्रधार—(पर्दे में से) आप सभी इस नाटक द्वारा जैनधर्म की प्रभावना का आदर्श लें और...

भारत के घर-घर चेलना जैसी आदर्श माता बनें।
घर-घर अभयकुमार जैसी वैरागी बालक बनें।
घर-घर जैनधर्म का प्रभाव फैले।
जैनशासन सर्वत्र जयवंत वर्तें।

बोलो, श्री महावीर भगवान की जय।
बोलो, जैनधर्म प्रभावक सर्व सन्तों की जय।
बोलो, जैनधर्म की जय।

॥ इति ॥

અનુભૂતિ તીર્થ મહાન, સ્વર્ણપુરી સોહે
યહ કહાનગુરુ વરદાન, મંગલ મુક્તિ મિલે.